बुक्सा जनजाति में सामाजिक परिवर्तनः एक समाज शास्त्रीय अध्ययन

प्रेमपाल

असि० प्रोफेसर समाज शास्त्र विभाग गन्ना उत्पादक पी०जी० कॉलेज, बहेड़ी, बरेली, (उ०प्र०), भारत

Author Email- premdr991@gmail.com

I. परिचय

भारत के उत्तराखण्ड हिमालय के दक्षिणी ढलान पर मानव–आवास योग्य निचली पर्वत श्रेणियों एवं घाटियों में आठ पर्वतीय जनपद– पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, नैनीताल, पौढ़ीगढ़वाल, चमोली, टेहरी गढ़वाल, उत्तरकाशी एवं देहरादून और जनपद ऊधमसिंह नगर स्थित हैं। इन सब जिलों के भू–भाग को सम्मिलित रूप में उत्तराखण्ड कहा जाता है। जो इस समय दो प्रशासनिक इकाईयों में विभाजित है, कुमाऊँ मण्डल उक्त प्रथम चार जिले कुमाऊँ का लगभग 4/5 भाग आ जाता है। इसमें पिथरौगढ़, एवं अल्मोड़ा जिले का सम्पूर्ण भू–भाग नैनीताल जिले क्षेत्र में आता है। नैनीताल जिले की तराई में शताब्दियों से थारू और बुक्सा जनजाति निवास करती आयी हैं। थारू जनजाति अपना सम्बन्ध राजस्थान के राजपूतों से जोड़ते हैं। और बुक्सा जनजाति अपने को धारानगरी के राजपूत राजघरानों से जोड़ते हैं।

यह दोनों जनजातियाँ नैनीताल के दक्षिणी मैदानी भागों में निवास कर रही हैं। (रूबाली मुगलकाल में उत्तरप्रदेश में जब अनिश्चय की स्थिति व्याप्त थी। तब इस संक्रमण काल में निर्बल व असभ्य सम्प्रदायों को ही नहीं बल्कि शक्तिशाली सरदारों को भी आत्मरक्षा के लिये हिमालय की तराई में शरण लेनी पड़ी जिसमें से कुछ जनजातियां व वंश आज भी तराई क्षेत्र में विद्यमान हैं। इस काल में तराई क्षेत्र में शरण लेने वाली जनजातियों में बुक्साओं का अस्तित्व दृष्टिगोचर होता है। इनके उदभव के सम्बन्ध में अनेक अनिश्चित्तायें हैं किन्तु यह भी सत्य है, कि बुक्सा आदिवासी नहीं हैं इनके उदभव के सम्बन्ध में कई मत प्रचलित हैं विद्वानों के मतानुसार बुक्सा जनजाति के इतिहास के बारे में बताया गया है कि हिमालय की तराई में विशेषतया उत्तरप्रदेश के उत्तरी भागों में रहने वाली एक जाति जो अपने को राजपूत वंश से उद्भूत बताती है। बुक्सा जनजाति राजस्थान के राजपूत अर्थात क्षत्रियों के वंशज हैं और इनका मूलस्थान धारानगरी से मुस्लिम शासन काल में यहां आकर बसे हैं। बुक्सा जनजाति के नाम एवं उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों जैसे मजूमदार, नेविल, क्रुक एटकिन्शन के ग्रन्थों एवं अवध गजेटियर में इन जनजातियों का विवरण देते हुए इन नामों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अलग–अलग विचार प्रस्तुत किये हैं और इनकों बुक्सा, भोक्सा, भोगस तथा बोक्सा इत्यादि नामों से उल्लिखित किया है। परन्तु वर्तमान मूल बुक्सा शब्द ही सर्वमान एवं प्रचलित है बुक्सा जनजाति के विशेष सन्दर्भ में एक विशेष तथ्य यह भी है कि देहरादून में निवास करने वाले बुक्साओं के लिये (मेहरे) शब्द भी कुछ ही समय पूर्व से उपयोग में आने लगा है यह फारसी शब्द (मेहरमकार) या जानकार व्यक्ति का अपभ्रंश है यह नाम इन्हे एक ब्रिटिश अफसर द्वारा दिया गया जो जंगल में रास्ता भटक जाने पर एक बुक्सा द्वारा उसे अपने शिविर में सुरक्षित, पहुँचा दिया गया था। तराई भाबर क्षेत्र में बुक्सा शब्द की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में एक किवदन्ती यह है कि प्राचीन समय में जो विशेष मानव समूह अपवित्र समझे जाने वाले पशु पक्षियों जैसे गिरगिट तथा मेढक को खाता था उसे स्थानीय समूह द्वारा 'भक्षी' शब्द द्वारा सम्बोधित किया जाने लगा। दूसरे शब्दों में भक्षी की एक दूसरी व्याख्या इस प्रकार की जाती है। कि मध्यकाल में तराई भाबर क्षेत्र सघन वन क्षेत्र में नर भक्षियों का आतंक था इस समय बाहर से आकर जिस मानव समूह ने इन नर भक्षियों, को समाप्त करके वहां पर स्थायी रूप से रहना प्रारम्भ किया उन्हीं को भक्षी या स्थानीय भाषा में (भोक्सा) कहा जाने लगा।

बुक्सा जनजाति का मूलस्थान छोड़ने का कारण मुस्लिम आक्रान्ताओं का प्रमुख कारण बताया जाता है इन्होंने अपनी धर्म संस्कृति, की रक्षा के लिये इन्हे जगलों में इधर–उधर भटकना पड़ा और यह लोग सेवको के साथ घूमते हुए तराई के बुक्सार क्षेत्र में आकर इस जनजाति ने अपना डेरा जमा लिया जिससे इस जनजाति का नाम बुक्सा पड़ा। आज का बुक्सा समाज पूर्व में राजस्थान के राजपूत राजा उदयजीत सिंह और जगतदेव सिंह दो भाईयों का ही वंशज है। नैनीताल जिले के कुमाऊँ पहाड़ों में भोक्सास रहते हैं यह ब्राहम्मणवादी, धार्मिक, अभ्यासी है सत्य ही तौर पर यह समुदाय हिन्दुत्व ही है। उत्तराखण्ड की तराई के क्षेत्र को "मिनी भारत" की संज्ञा दी जाती है। क्योंकि यहाँ पर विभिन्न प्रान्तों से आये विभिन्न समुदायों के लोग निवास करते हैं जिनकी अपनी अलग–अलग सामाजिक सांस्कृतिक विशेषतायें हैं। तराई में रहने वाले विभिन्न समुदायों में थारू, बुक्सा, भोटिया, जौनसार, वनरावत, तथा पूर्वांचली, मुस्लिम, कुमाऊँनी तथा गढ़वाली, प्रमुख है। जनसंख्या एवं प्रभुत्व की दृष्टि से तराई में थारू तथा पंजाबी समुदाय अग्रणी है। ऐसा माना जाता है कि पंजाबियों ने ही तराई की दलदली व जंगली भूमि को अपनी मेहनत के द्वारा कृषि योग्य बनाया है। जिसकी तराई के विकास में अग्रणी भूमिका है। यह बात सत्य है पूर्ण सत्य नहीं है। पंजाबी समुदाय के साथ–साथ एक और समुदाय बुक्सा एवं निम्न वर्ग के थारू समुदाय ने तराई के विकास में कंधा मिलाकर अपना पूर्ण सहयोग दिया है। तराई में कृषि करने वाले लोग अधिकतर बुक्साओं पर ही निर्भर रहते हैं। कृषि मजदूरों के रूप में अधिकांश बुक्सा समुदाय के लोग ही कार्य करते हैं। विशेषकर धान की खेती की जो तरक्की आज हुई है उसमें निम्न वर्ग के थारू एवं बुक्साओं की अहम भूमिका हैं। इसके अलावा कारखानों व्यवसायिक संस्थानों तथा अन्य जगह

में कार्य करने हेतु अधिकांश श्रमिक समुदाय से ही आते हैं। तराई क्षेत्र के जनपद ऊधमसिंह नगर के गदरपुर, बाजपुर, दिनेशपुर तथा गूलरबोझ आदि स्थानों में बुक्सा समुदाय की अच्छी खासी जनसंख्या निवास करती है। आज के समय में तराई की जो भी सामाजिक संस्कृति बनी है उसमें बुक्सा संस्कृति की स्पष्ट एवं अहम भूमिका है। यहां पर रहने वाले सभी अन्य समुदायों के विभिन्न क्रिया–कलापों में बुक्सा समुदाय का सक्रिय योगदान रहता है।

तराई क्षेत्र में रहने वाले अधिकांश बुक्सा समुदाय आज भी निर्धन हैं और विभिन्न क्षेत्रों में मजदूरी करते है। उत्तराखण्ड सरकार ने उत्तराखण्ड राज्य में पढ़ने–लिखने के लिये छात्रवृत्ति हेतु अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता दी है। किन्तु शिक्षण संस्थानों में प्रवेश व नौकरियों में इन्हे आरक्षण का कोई खास लाभ नहीं मिलता है। जिसकी वजह से बुक्सा समुदाय के लोग कृषि के अलावा मछली पालन, पशुपालन, मुर्गीपालन, बकरी, गाय, भैस, आदि पालते हैं। इसके बाद आज भी बुक्सा समुदाय की महिलायें आज भी पुरूषों के साथ खेती में काम करती हैं। तथा आज भी बुक्सा समुदाय कृषि को ही महत्वपूर्ण मानते हैं। चुनाव के वक्त हर एक नेता इस समुदाय को यहीं झांसा देकर वोट बटोर लेता है। कि कुर्सी पर बैठकर सबसे पहले बुक्सा जनजाति को आरक्षण दिलवाऊंगा चुनाव के समय हर एक प्रत्याशी इस बुक्सा समुदाय को यही झूठा आश्वासन देकर वर्षो से वोट बटोरता चला आ रहा है। यह इस समाज के सीधेपन की पीड़ा है। जिसे समझने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में जनपद ऊधमसिंह नगर (रूद्रपुर) के तहसील गदरपुर, बाजपुर, दिनेशपुर, क्षेत्र में बुक्सा जनजाति की लगभग तीस हजार जनसंख्या निवास कर रही है।

II. बुक्सा जनजाति के विषय में

बुक्सा जनजाति के इतिहास के बारे में बताया गया है। कि हिमालय की तराई में विशेषतया उत्तर प्रदेश के उत्तरी भागों में रहने वाली एक जाति जो अपने को राजपूत अर्थात क्षत्रियों के वंशज बताते हैं। इनका मूल स्थान धारानगरी बताया गया है और यह जनजाति मूलतः किरातों की ही एक प्रजाति है। यह लोग राजस्थान के धारानगरी से मुस्लिम शासन काल में यहां आकर बसे हैं। लेकिन इतना तय है। कि बुक्सा समुदाय तराई क्षेत्र में काफी पुराने समय से निवास कर रहा है। यह भी कहा जाता है। कि अगर बुक्सा और उनके भाई थारू न होते तो शायद ही तराई इतनी आबाद होती बुक्सा लोग उत्तर प्रदेश के उत्तरांचल राज्य के तराई क्षेत्र में निवास करते हैं। पुराने जमाने में यह लोग झूम की खेती किया करते थे और इधर–उधर भ्रमण कर जीवन–यापन करते थे लेकिन अब ये लोग परिवर्तन के इस दौर में तराई में ही जहां–तहां गांव बसाकर रहने लगे हैं। वर्तमान में अब इस समुदाय के लोग मुख्य रूप से खेती पशुपालन व मछली का शिकार करते हैं और बुक्सा समुदाय खेती को अपना मुख्य व्यवसाय मानते हैं और यहां तक इस जनजाति के लोगों का कहना है। कि हमारे जीवन की आधार रेखा या (आधार शिला) कृषि है। जिससे आज हम अपने जीवन को गुजार रहें हैं।

III. साहित्य समीक्षा

III.I. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर

बुक्सा जनजाति के सम्बन्ध में प्राथमिक एवं आधार भूत बातों की जानकारी का उल्लेख E.T. Atqinsion की पुस्तक (The Himalayan DIstriets of North Western Proviness of India (1886 vol. 3rd) और W.erroke" की पुस्तक "Trives and costs of Northwest Provinees and oudn, (1886 Vol. IV)" तथा J.C. Nesfield के लेख "Description of manners Industries Religion of the thanus and bogsa Tride upper India" (1985 Culcutta Review Vol. xxx1) B.R. पब्लिशिक कॉरपोरेशन नई दिल्ली द्वारा (1979 में प्रकाशित अमीर हसन की पुस्तक "Buxsa of Tarai") भी उपलब्ध है। हसन ने पारम्परिक बुक्साओं की संस्कृति एवं इनकी कुछ समस्याओं का उल्लेख किया है। बुक्सा समुदाय के वर्तमान सामाजिक स्तर एवं इनकी समस्याओं के सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्याप्त शोध कार्य नहीं हुआ है।

III.II. राष्ट्रीय स्तर पर

बुक्सा जनजाति के बारे में कृष्ण कुमार शर्मा द्वारा लिखित एक पुस्तक 'बुक्सा जनजाति इतिहास परम्परायें एवं संस्कृति से प्रकाशन सेवा प्रकल्प संस्थान रूद्रपुर उत्तराखण्ड से प्रकाशित की है। यह पुस्तक बुक्सा जनजाति के विषय में आधार भूत जानकारी प्रदान करती है। अमीर हसन के कुछ लेखों में भी बुक्सा जनजाति के विषय में बहुत से तथ्यों को प्रकाश में लाया गया है। उदाहरणः– "Perspectives in tribal areas Development Focus on Uttra Pradesh" के शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक में सम्मिलित "land reform in trival areas and its Consequences" और "Reflections on change Among Tribals of Uttar Pradesh आदि लेखों में यह पुस्तक डा0 एच0एस0 सक्सेना के सम्पादकत्व में लखनऊ से प्रकाशित हुई है। प्रो0 बि0एस0 विष्ट की पुस्तक "Tribes of Uttrakhand" में भी बुक्सा जनजाति से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त होते हैं। श्री बद्री दत्त पाण्डे की पुस्तक 'कुमाऊँ का इतिहास' में बुक्सा समुदाय का वर्णन ऐतिहासिक दृष्टिकोण से किया गया है।

IV. अध्ययन के उद्देश्य

1. बुक्सा जनजाति की अनोखी पारम्परिक संस्कृति व उसके इतिहास की वस्तु निष्ट जानकारी एकत्रित कर प्रकाश में लाना।

2. बुक्सा जनजाति के लोगों में आ रही जागरूकता सामाजिक आर्थिक राजनैतिक व शैक्षिक आदि के स्तर का सही–सही पता लगाना।
3. बुक्सा जनजाति के लोगों की आधुनिक युवा पीढ़ी पर नगरीकरण आधुनिकीकरण औद्यगीकरण आदि प्रक्रियाओं के प्रभाव का पता लगाना।
4. बुक्सा जनजाति के लोगों की स्थिति पर संवैधानिक संरक्षण व अन्य सरकारी योजनाओं के असर का पता लगाना।

V. अध्ययन क्षेत्र एवं अध्ययन विधि

शोध क्षेत्र के रूप में जनपद ऊधम सिंह नगर की गदरपुर तहसील को चुना गया है। इस तहसील के अधिकांश ग्रामों में बुक्सा जनजाति की बहुलता है। शोध पत्र का विषय इस तहसील के बुक्सा जनजाति में जागरूकता से सम्बन्धित हैं। जनजातीय लोगों के अध्ययन के लिये इस शोधकार्य में नृजातिकी पद्धति का प्रयोग किया गया है। जिसकी निम्नलिखित प्रविधियों की सहायता ली गयी है। सामाजिक घटनाओं के अध्ययन से सम्बन्धित नृजातिकी तुलनात्मक रूप से एक नयी पद्धति है। यह पद्धति वैज्ञानिक प्रत्यक्षवाद का समर्थन नहीं करती बल्कि अवलोकन के द्वारा किसी छोटे समूह में लोगो के दैनिक व्यवहारों के अध्ययन को महत्व देकर अनेक उपयोगी निष्कर्ष प्रस्तुत करती है।

VI. निष्कर्ष

यह सर्वविदित तथ्य है कि आज जनजातियों का स्वरुप वह नहीं है जो वर्षो पहले था। आधुनिकता, औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा के प्रसार, राजनैतिक चेतना आदि ने जनजातियों की संस्कृति एवं व्यवस्था के मूल ढांचें पर प्रभाव डाला है जिसका परिणाम है कि यह जनजातियां अब विकास की मुख्य धारा से जुड़ने लगी हैं। कम से कम उत्तराखण्ड के सन्दर्भ में तो यह बात शत प्रतिशत सत्य है कि उत्तराखण्ड के जनजातीय युवाओं में नवीन चेतना का उदय हुआ है। पुरानी पीढ़ी की तुलना में नयी पीढ़ी के व्यक्ति आधुनिक व स्वतन्त्र विचार धारा को अधिक अपना रहें है।

आधुनिक समाज के सम्पर्क में आने के कारण बुक्सा जनजाति की शिक्षा, व्यवसाय, खानपान, रहन–सहन आदि पर काफी अधिक प्रभाव पड़ा है। अधिकांश युवा अपनी परम्परा, संस्कृति, रीति–रिवाज को कम महत्व देने लगे है। आज सरकार द्वारा इनकी समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। सरकार द्वारा अनेक सुविधायें इन्हें प्रदान की जा रही है।

सन्दर्भ–सूची

1. अरूण, (2004) भारत की प्रमुख जातियों का कोश, विश्व भारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
2. अग्रवाल, एस0एन0, (1969) पब्लिकेशन इण्डिया द लैण्ड एण्ड प्यूपल्स, नैशनल बुक ट्रस्ट, न्यू देहली।
3. अरोरा, जी0एस0 (1972) ट्राइब कास्ट क्लास इनकाउंटर्स, हैदराबाद ऐडमिनिसट्रेटिव स्टाफ कालेज ऑफ इण्डिया।
4. बिष्ट, बी0 एस0, (1999) "ट्राइवल डेवलपमेन्टः ए केश स्टडी आफ हिमालयन ट्राइब्स आफ उत्तराखण्ड" बैंकवर्ड कम्यूनिटीज–आइडेन्टिटी, डेवलपमेन्ट एण्ड ट्रॉंसफोर्मेशन, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
5. बिष्ट, बी0एस0, (1997), उत्तराखण्ड की भोटिया जनजाति, विवेक प्रकाशन, दिल्ली।